भारतीय महिलाओं के उत्थान में सावित्री बाई फुले का योगदान

डॉ. राजेश मौर्य¹ एवं प्रो. जे. पी. मित्तल²

¹ सहा. प्रा. अर्थशास्त्र, शास. नेहरू महा. वि. सबलगढ, जिला-मुरैना, मध्य प्रदेश

² प्राचार्य, शास. नेहरू महा. वि. सबलगढ जिला-मुरैना, मध्य प्रदेश

सारांश

भारत में स्थित महाराष्ट्र राज्य के सतारा जिले में नया गांव नामक स्थान पर 3 जनवरी, 1831 को एक ऐसी महिला का जन्म हुआ था, जिन्हें प्राचीन भारतीय समाज की दबी-कुचली, शोषित व उत्पीड़ित महिलाओं के उत्थान के लिये जाना जाता है। वह थी सावित्री बाई फुले, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन महिलाओं के स्तर को पुरुषों के समकक्ष लाने के लिये लगा दिया था। सावित्री बाई ने जहां एक तरफ महिलाओं को साक्षर बनाने के लिये कार्य किया था, वहीं दूसरी तरफ एक समाज सुधार के रूप में सदियों से चली आ रही परम्पराओं, रूढ़ियों, प्रथाओं आदि से मुक्त करने के लिये सत्यशोधक समाज की स्थापना की थी। उनका पहला लक्ष्य महिलाओं को साक्षर करने के लिये था, लेकिन स्कूल संचालन के दौरान उनको अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा था। सावित्री बाई इन समस्याओं और संघर्षों को झेलते हुये अपने शिक्षा संबंधी कार्य में सतत रूप से लगी रही थी, इसीलिये उन्हें आधुनिक भारत की पहली महिला शिक्षक कहा जाता है। सावित्री बाई न केवल एक शिक्षक थी, बल्कि समाज सुधारक तथा लेखन कार्य के अन्तर्गत एक कवियत्री भी थी। उन्होंने समाज सुधार के अन्तर्गत प्रथाओं व परम्पराओं के कारण शोषित व उत्पीड़ित महिलाओं की स्थिति में सुधार करने का कार्य किया। सावित्री बाई ने अपने जीवन में जो लेखन कार्य किया, वह अनूठा व अन्तर्दृष्टि का पर्याय था, जो सामाजिक आन्दोलन के माध्यम से महिलाओं को अपना जीवन यापन करने की स्वतंत्रता प्रदान करता है।

बीज शब्द: पहली महिला शिक्षक, समाज सुधारक, रूढ़ियां, भारतीय समाज, कुरीति, महिला शिक्षा।

प्रस्तावना

आधुनिक भारत की पहली महिला शिक्षक, समाज सुधारक, महिलाओं की उत्थानकर्ता तथा लेखक (कवियत्री) इत्यादि के रूप में जिस भारतीय महिला का नाम लिया जाता है, वह सावित्री बाई फुले हैं। जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन महिलाओं की स्थिति सुधारने तथा समाज की निम्न जातियों (शूद्र-अति शूद्र) की महिलाओं को शिक्षित करने में व्यतीत कर दिया था। शिक्षा की दृष्टि

से जहां एक तरफ उन्होंने विभिन्न स्कूलों की स्थापना पर जोर दिया, वहीं दूसरी तरफ सदियों से चली आ रही परम्पराओं, रूढ़ियों, प्रथाओं से जकड़ी हुयी महिलाओं को स्वतंत्र एवं समाज की मुख्य धारा से जोड़ने के लिये सत्यशोधक समाज की स्थापना की थी।

3 जनवरी, 1831 को ब्रिटिश भारत के महाराष्ट्र राज्य के सतारा जिले में स्थित नयागाँव नामक क्षेत्र में

जन्मी सावित्री बाई फुले, एक साधारण किसान परिवार से थी, चूंकि उस समय महिलाओं से संबंधित परम्परायें, रूढ़ियां एवं रीति-रिवाज काफी उग्र स्थिति में थे, इसलिये उनका विवाह मात्र 9 वर्ष की उम्र में ही महान समाज सुधारक ज्योतिराव राव फुले से सन 1840 में हो गया था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा तथा शिक्षा के प्रति रुचि में वृद्धि शादी के बाद हुयी थी, क्योंकि उनके पति (ज्योतिराव राव फुले) एक समाज सुधारक तथा शिक्षा के प्रति लोगों को जाग्रत करने में संलग्न थे, विशेष रूप से समाज के कमजोर वर्ग (शूद्र-अति शूद्र), उनका मानना था कि समाज में अन्य उच्च जातियों की तुलना में शूद्र व अति-शूद्र वर्ग सामाजिक-आर्थिक रूप से सदियों से पिछड़ा हुआ हैं, इसलिये समाज में सामाजिक समानता स्थापित करने तथा उनके स्तर को उच्च करने के लिये शिक्षित करना अति आवश्यक हैं। उन्होंने अपने पति के सहयोग से विभिन्न कठिनाईयों एवं संघर्षों को झेलते हुये - “सन 1846-47 में तीसरी एवं चौथी कक्षा उत्तीर्ण कर ली थी।”¹ उसके बाद उनकी शिक्षा के प्रति रुचि जाग्रत हुयी थी।

सावित्री बाई फुले में शिक्षा के प्रति रुचि इस प्रकार जाग्रत हुयी कि उन्होंने अल्प समय में ही हिन्दी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा में भी महारथ हासिल कर ली थी, जो कि उस समय महिलाओं के लिये ईद का चाँद जैसी थी, उनकी इसी योग्यता ने ही उन्हें एक कवियत्री बनने के लिये प्रेरित किया और भविष्य में वे एक सफल कवियत्री साबित हुयी थी।

जब हम उनकी कविताओं का अध्ययन करते हैं, तो हमें मानवता, दीन-हीन महिलाओं की व्यथा, लिंग भेदभाव, जाति भेदभाव, महिला एवं बाल कल्याण के साथ-साथ सामाजिक सुधारों के अंश प्राप्त होते हैं। उन्होंने कविताओं तथा शायरियों के माध्यम से प्राचीन भारतीय महिलाओं की स्थिति का बहुत ही खूबसूरत तरीके से वर्णन किया हैं और महिलाओं को स्वतंत्रता एवं समानता (पुरुष के साथ) प्रदान करने हेतु विभिन्न प्रकार से समाधान व उपाय भी निर्धारित किये थे, ताकि महिलाओं को पुरुषों के समान स्वतंत्रता तथा अधिकार प्राप्त हो सके।

जीवन परिचय

प्राचीन भारतीय समाज ने लोगों को जाति में बांटा, पुरुष प्रभुत्व को बनाये रखने के लिये लिंग भेदभाव की भावना को बनाये रखा, लोगों में घृणा व वैमनष्यता के बीज उत्पन्न किये और उत्पीड़न तथा शोषण की एक ऐसी मिशाल पेश की, जिसने सम्पूर्ण मानव जाति को शर्मसार किया, भला हो (सावित्री बाई फुले) का, जिन्होंने अपनी क्षमता व योग्यता के आधार पर प्राचीन भारतीय समाज की बुराईयों को दूर करके अपनी एक अनूठी तस्वीर पेश की।

भारत के महाराष्ट्र राज्य की एक ख्याति प्राप्त शिक्षाविद तथा समाज सुधारक सावित्री बाई फुले का जन्म 3 जनवरी, 1831 को सतारा जिले के नयागांव नामक स्थान पर हुआ था।² उनके माता-पिता एक साधारण किसान परिवार, जिनका नाम क्रमशः लक्ष्मी तथा खंडोजी नेवशे पाटिल था।³ वे उनकी सबसे बड़ी बेटी थी। प्राचीन भारतीय समाज में महिलाओं से संबंधित कई प्रकार की परम्परायें, प्रथायें, रूढ़ियां तथा रीति-रिवाज प्रचलित थे, जिसके कारण उनका विवाह अल्प आयु (9 वर्ष) में ही कर दिया गया था। उनके पति ज्योतिराव फुले एक समाज सुधारक तथा समाज की निचली जातियों में शिक्षा की ज्योति जलाने जैसे कार्य में संलग्न थे, जिनका सबसे अधिक प्रभाव उनकी पत्नी (सावित्री बाई फुले) पर पड़ा था अर्थात् सावित्री बाई अपने पति से प्रेरणा प्राप्त करके उनके साथ इस समाज सुधार में शामिल हो गयी थी।

सावित्री बाई फुले का शिक्षण कार्य अर्थात् प्रारंभिक एवं आगे की शिक्षा शादी के बाद ज्योतिराव फुले के संरक्षण में हुयी थी, हालांकि उन्हें अपनी शिक्षा ग्रहण करने के लिये अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा था, क्योंकि उस समय महिलाओं का शिक्षा प्राप्त करना सामाजिक दृष्टि से उचित नहीं था, पुरुष प्रभुत्व समाज इसे स्वीकार नहीं करता था, परन्तु फिर भी उन्होंने शिक्षा प्राप्त की और अपनी एक विशिष्ट पहचान बनायी थी।

सावित्री बाई फुले ने अपने पति के अलावा आगे की शिक्षा हेतु अपने दोस्तों अर्थात् सखाराम, यशवंत परांजये तथा केशव शिवराम भावलकर के सहयोग से ग्रहण की थी। अपनी शिक्षा पूर्ण करने के बाद वे अपने पति (ज्योतिराव फुले) के साथ समाज सेवा तथा महिलाओं को शिक्षित करने में जुट गयी। उन्होंने इसके लिये स्कूली शिक्षा से संबंधित प्रशिक्षण भी प्राप्त किया था। फुले दंपति (सावित्री बाई, ज्योतिराव फुले) को शिक्षित करने में शगुना बाई, जो कि ज्योतिराव फुले की मौसेरी बहन थी, का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा था, चूंकि शगुना बाई एक ब्रिटिश अधिकारी के बेटे को संभालने का काम करती थी इसलिये उन्हें अंग्रेजी भाषा का अच्छी तरह से ज्ञान हो गया था, जिसका उपयोग उन्होंने ज्योतिराव तथा सावित्री बाई फुले को सिखाने में किया था। ऐसा अनुमान है कि फुले दंपति को अंग्रेजी भाषा को सिखाने में शगुना बाई ने अपनी अहम भूमिका निभाई थी।

सावित्री बाई: एक शिक्षक

जैसा कि हम पूर्व में जान चुके हैं कि सावित्री बाई को आधुनिक भारत की पहली महिला शिक्षक के रूप में स्थान प्राप्त है क्योंकि उन्होंने पहला निर्णय प्राचीन भारतीय समाज की दबी-कुचली, शोषित और निराक्षित महिलाओं को साक्षर करने का लिया था। उन्होंने अपना अध्ययन पूर्ण करने के बाद सन 1848 में पुणे के भिडेवाड़ा नामक स्थान पर लड़कियों के लिये पहला स्कूल खोला था² और 9 छात्रों के साथ वे स्वयं उसकी प्रधानाध्यापक बनी थी। इसके लिये सदाशिव गोबंदे ने अहमदनगर से पुस्तके भेजी तथा स्कूल चलने लगा। इस स्कूल को आरंभ करने में सावित्री बाई अपने पति सहित अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा था। समाज, यहाँ तक कि उनके परिवार वालो ने उनके इस निर्णय का जमकर विरोध किया। घृणा पूर्वक अपमान जनक टीका टिप्पणियां की गयी थी, जिसके परिणामस्वरूप स्कूल केवल 6 माह तक चला और उसके बाद उन्हें बंद करना पड़ा था। इन दिनों में वह सतत रूप से घर पर अध्ययन करती रही। बाद में उनके दोस्त शिक्षक केशव शिवराम भावलकर, जो

पूना के एक मराठी सरकारी स्कूल में कार्यरत थे, के सहयोग से जूना गंज में पुनः स्कूल शुरू किया गया। इस स्कूल को आरंभ करने में मुस्लिम समुदाय के उनके दोस्त उस्मान शेख तथा फातिमा शेख की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी, क्योंकि इन्होंने पाठशाला खोलने के लिये अपने घर के परिसर में जगह दी थी।

सावित्री बाई को पाठशाला संचालन के दौरान अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा था, क्योंकि उनके स्कूल में अधिकांश लड़कियां ऐसे समुदाय या वर्ग से थी, जिन्हें उस समय (शूद्र - अति शूद्र) निचली जातियों की श्रेणी में गिना जाता था और निचली जातियों को पढ़ने का अधिकार नहीं था, लेकिन वे घबराई नहीं और सतत रूप से अपने शिक्षक कार्य में संलग्न रही, हालांकि स्कूल जाने के दौरान उन्हें घोर उत्पीड़न एवं लोगों की अपमान जनक टिप्पणियों का सामना करना पड़ा था, जैसे- जब वे घर से स्कूल के लिये रवाना होती थी, तो लोगों द्वारा उन पर कीचड़, गोबर, पत्थर फेंका जाता था।³ यह विरोध उन लोगों द्वारा किया जाता था, जो परम्पराओं, रूढ़ियों तथा प्रथाओं को मानने वाले थे और महिला शिक्षा के पूर्ण विरोधी थे। सावित्री बाई ने ऐसे हमलों को कई दिनों तक झेला था। इन हमलों को झेलने के दौरान उनकी प्रतिक्रिया थी - “भगवान तुम्हें क्षमा करें, मे अपना कर्तव्य निभा रही हूँ, क्या वह (भगवान) आपको आर्शीवाद दे सकता है”⁴ बाद में वह हिम्मत हार गयी, तब उनके पति (ज्योतिराव फुले) ने उन्हें प्रोत्साहित किया और पुनः वह स्कूल जाने लगी। अब वह दो साड़ियां लेकर जाती थी, पुरानी साड़ी पहनकर, पाठशाला में पहुँचकर बदल लेती थी। कुछ समय बाद लोगों ने उन्हें परेशान करना बंद कर दिया, यह तब हुआ जब सावित्री बाई को एक सड़क पर चलते हुये व्यक्ति को थप्पड़ मारना पड़ा था। बाद में उन्हें लाने ले जाने के लिये एक चपरासी को नियुक्त किया गया था।⁵

सावित्री बाई फुले जब वह अपने महिला शिक्षा अभियान में सफल होने लगी तो समाज के महिला शिक्षा विरोधियों ने पुनः विरोध करना शुरू किया और उनके

परिवार वालों पर दबाव डालते हुये कहा कि आपका लड़का और बहु (ज्योतिराव, सावित्री बाई) जो काम कर रहे हैं, वह धर्म-शास्त्रों के खिलाफ हैं, एक प्रकार से वेद शास्त्रों का अपमान हैं। उनके परिवार वालों ने इस बात को स्वीकार किया और सन 1948 में इस फुले दंपति को घर छोड़ना पड़ा था।

फुले दंपति समाज की निचली वर्ग की महिलाओं को शिक्षित करने में एक और विरोध का विवरण मिलता है और वह यह है कि जब फुले दंपति महिलाओं को शिक्षित करने में संलग्न थे, तब महाराष्ट्र में सन 1881-1920 के बीच बाल गंगाधर के नेतृत्व में एक राष्ट्रवादी प्रवचन चल रहा था।⁶ इस प्रवचन ने धर्म शास्त्रों का हवाला देते हुये कहा कि फुले दंपति द्वारा जिन समाज की निचले वर्ग की लड़कियों को साक्षर करने का कार्य किया जा रहा है, वह एक प्रकार से धर्म शास्त्रों और वेदों उपनिषदों का अपमान हैं। उसे तुरंत बंद किया जाना चाहिये। इन सब विरोधों के बावजूद फुले दंपति घबराये नहीं बल्कि वे सतत रूप से अपने शिक्षक कार्य में लगे रहे, भिडेवाड़ा में उनके द्वारा जो स्कूल संचालित किया गया था, उसमें गणित, विज्ञान विषयों के साथ-साथ सामाजिक विज्ञान के पारम्परिक पश्चिमी शैली पर आधारित पाठ्यक्रम शामिल थे। सन 1851 तक फुले दंपति इस प्रकार के लगभग 3 स्कूल संचालित कर चुके थे। उनका स्कूल संचालन, शिक्षण विधियाँ, कक्षाएँ लेने का स्तर उस समय के सरकारी स्कूलों की तुलना में कहीं अधिक बेहतर था। दिव्या कुंदकुरी (लेखक) का कहना है कि - “फुले दंपति द्वारा संचालित किये गये स्कूलों का स्तर सरकारी स्कूलों की तुलना में कहीं अधिक बेहतर था, इसीलिये फुले दंपति के स्कूलों में सरकारी स्कूल की तुलना में लड़कियों की संख्या अधिक थी।”⁷ इसका कारण, फुले दंपति द्वारा निचली वर्ग की महिलाओं को शिक्षा हेतु प्रोत्साहन करना था, जबकि सरकारी स्कूलों में पूरे से ही भारतीय सामाजिक परम्पराओं के कारण महिलाओं को शिक्षा अर्जित करने का कोई अधिकार नहीं था।

सावित्री बाई अपने शिक्षण कार्य में इतनी अधिक निपुण थी कि वे हिन्दी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा में भी बात करने में सक्षम थी। जब एक बार राजस्व आयुक्त स्कूल का निरीक्षण करने के लिये गये तो सावित्री बाई अपने अध्ययन में तल्लीन थी, तब आयुक्त महोदय ने उनकी प्रशंसा की क्योंकि उन्होंने उनसे अंग्रेजी में बात की थी, इससे यह स्पष्ट होता है कि ब्रिटिश भारत में सावित्री बाई शिक्षा की दृष्टि से अद्वितीय थी, उनकी योग्यता व क्षमता को देखकर अंग्रेज भी यही कहते थे कि आधुनिक भारत की वास्तविक रूप से वह महिला शिक्षक हैं। उनकी शिक्षा के प्रति लगन व योग्यता को ध्यान में रखते हुये सन 1852 में ब्रिटिश सरकार द्वारा सर्वश्रेष्ठ शिक्षक के रूप में घोषित किया गया।⁸

सावित्री बाई की शैक्षणिक योग्यता व क्षमता से न केवल भारतीय सामाजिक-आर्थिक दार्शनिक प्रभावित थे बल्कि ब्रिटिश इतिहासकार और दार्शनिक भी प्रभावित थे। ऐसे ही दो ब्रिटिश दार्शनिक बुल्फ और एंड्रेड (Thom Wolf & Susan Andrade 2008) अपने एक लेख में वर्णन किया है कि - “भारतीय समाज की निचली वर्ग की महिलाओं के लिये शिक्षा की दृष्टि से वे एक रोल मॉडल थी। उन्होंने उस समय की लड़कियों के बीच शिक्षा के प्रति एक प्रकार की क्रांति उत्पन्न कर दी थी। वह बच्चों (लड़की व लड़कों) के लिये बाल संवेदनशील, सार्वभौमिक, बौद्धिक क्षमता तथा सामाजिक रूप से शिक्षा में सुधार की धारणा रखने वाली पहली भारतीय थी।”⁹ इसी प्रकार ब्रिटिश लेखक रोजालिंड ओहेलोन (Rosalind O-Hanlon), जो कि ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के पूर्व कैम्ब्रिज विद्वान स्पष्ट करते हैं कि - “19वीं शताब्दी में सावित्री बाई फुले ने भारतीय समाज की निम्न जाति की महिलाओं की समस्या को प्रमुखता देते हुये उनका समाधान करने में अपनी अहम भूमिका अदा की थी, क्योंकि उस समय विभिन्न प्रकार की कुरीतियाँ, परम्परायें, प्रथाएँ प्रचलित थी। जिसके कारण वह (महिलाएँ) दासता और दयनीय स्थिति में अपना जीवन यापन कर रही थी। ऐसी स्थिति में सावित्री बाई ने इन

समस्याओं को समाप्त कर महिलाओं में एक विशेष प्रकार की क्रांति उत्पन्न कर दी थी। उन्होंने न केवल महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा दिया बल्कि ब्राह्मण बादी अस्तित्व को भी चुनौती दी थी।¹⁰ उनका कहना था कि महिलाओं की निम्न या दयनीय स्थिति के लिये समाज के सबसे उच्च पायदान पर स्थिति ब्राह्मण वर्ग और उनके द्वारा रचित किये गये वेद, पुराण व उपनिषद जिम्मेदार हैं। जिनका हमें कड़ाई से विरोध करना होगा। जब तक हम इन परम्पराओं, रूढ़ियों व प्रथाओं का बहिष्कार नहीं करेंगे, तब तक समाज में भारतीय नारियों का उत्थान संभव नहीं है। उन्होंने कविता के लय में कहा कि दासता और गुलामी की जंजीरों को तोड़ दो, संघर्ष करो, कड़ी मेहनत करो और सभी संगठित होकर सामाजिक बुराईयों का विरोध करो, सावित्री बाई ने अपने साहस व हिम्मत के बल पर न केवल समाज की महिलाओं को शिक्षा के लिये प्रोत्साहित किया बल्कि शूद्र व अति शूद्र वर्ग की, महिलाओं को भी शिक्षा प्रदान करने में अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित कर दिया था, इसलिये उन्हें महिला के संदर्भ में आधुनिक भारतीय शिक्षा की जननी कहा जाता है।

सावित्री बाई: एक समाज सुधारक

प्राचीन भारतीय समाज अनेक प्रकार की बुराईयों से ग्रसित था। परम्परायें, प्रथाएँ, रूढ़ियाँ, कुरीतियाँ, अंध-विश्वास आदि ने इस प्रकार से समाज को जकड़ लिया था। जिसकी वजह से समाज का एक वर्ग शूद्र या अति शूद्र पिछड़ गया या विशेष रूप से महिलायें, पुरुष प्रभुत्व समाज ने उन्हें कभी-भी पुरुषों के समकक्ष समानता का अधिकार नहीं दिया था। उसे (महिला) केवल भोग-विलास की वस्तु समझा गया और पुरुषों ने अपनी इच्छा से उनका उपयोग किया था। ऐसी परिस्थितियों में सावित्री बाई फुले उनके उत्थान के लिये एक समाज सुधार या महिलाओं को सशक्त करने की श्रृंखला में उभरकर आयी थी, क्योंकि उनका दृष्टिकोण मानवता, स्वतंत्रता, समानता तथा न्याय (सामाजिक न्याय) इत्यादि तत्वों पर आधारित था। वह हमेशा समाज की दीन-हीन या पुरुष द्वारा उत्पीड़ित महिलाओं की स्थिति को सुधारने के बारे में सोचा करती थी। वह एक ऐसा समाज

चाहती थी, जहाँ पुरुष व महिलायें एक समान हो तथा जितने अधिकार पुरुष को प्राप्त हैं, उतने ही महिलाओं को होना चाहिये, इसीलिये सर्वप्रथम उन्होंने महिलाओं को शिक्षित करने का बीड़ा उठाया था। वह महिलाओं के उत्थान या सशक्तिकरण के लिये शिक्षा अर्थात् ज्ञान को सर्वोपरी मानती थी। उन्होंने कहा कि - “ज्ञान को अपना ईश्वर बनाये, उसका हर तरह से पीछा करें, दृढ़ संकल्प के साथ अपने दिमाग को ज्ञान के प्रति एकाग्र करें, वह सभी के लिये उपहार है एवं ज्ञान का खजाना है।”¹¹ जिसके माध्यम से महिलायें न केवल बुद्धिमान मनुष्य के रूप में पहचानी जायेंगी, बल्कि वे अपने सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक व धार्मिक अधिकारों को भी प्राप्त करने में सक्षम होगी।

प्राचीन भारतीय समाज के संदर्भ में - “19वीं सदी विभिन्न प्रकार की बुराईयों जैसे:- जाति प्रथा, अस्पृश्यता व सती प्रथा जैसी घृणित समस्याओं से ग्रसित थी।”¹² पुरुष प्रभुत्व समाज का वर्चस्व था, जिसने महिलाओं को समाज से अलग-थलग कर दिया था, उन्हें न तो शिक्षा अर्जित करने का अधिकार था और न ही अपनी राय या विचार व्यक्त करने का, पुरुष प्रधान समाज ने एक प्रकार से महिलाओं को द्वितीय श्रेणी के नागरिक के रूप में मान्यता दी थी। परम्पराओं और रीति-रिवाजों के प्रचलन के कारण बाल-विवाह एवं विधवा विवाह का विरोध जैसी घृणित प्रथाएँ प्रचलित थी। बाल-विवाह के कारण महिलाओं को न चाहते हुये सती प्रथा का पालन करना पड़ता था। जिसके अन्तर्गत पति की मृत्यु होने पर उसे भी अपने पति की चिता के साथ जलकर मरना पड़ता था अर्थात् 19वीं शताब्दी में भारत में महिलाओं के लिये एक प्रकार से अंधकार का युग साबित हुआ था।

फुले दंपति (ज्योतिराव एवं सावित्री बाई फुले) ने समाज की इन बुराईयों को ध्यान में रखते हुये एक भिन्न धर्म की छावे पेश की, जिसे सार्वभौमिक रूप से जाना जाता है। उन्होंने सर्वप्रथम जाति-प्रथा पर हमला बोला, जिसके तहत सावित्री बाई ने अपने घर के परिवार में ही एक कुआँ का निर्माण किया ताकि समाज की अछूत वर्ग

की महिलाएं आसानी से पीने का पानी प्राप्त कर सके। यह उस समय एक बहुत बड़ी बात थी, क्योंकि अछूतों को सार्वजनिक स्थानों पर निर्मित कुओं से पानी प्राप्त करना संभव नहीं था। ब्राह्मण वर्ग ने उन पर अनेक प्रकार के प्रतिबंध लगा दिये थे।

सार्वभौमिक या सत्य धर्म के अन्तर्गत फुले दंपति ने एक ऐसे धर्म का प्रतिपालन करने के लिये कहा, जिसमें सभी लोग एक समान एवं स्वतंत्रता पूर्वक अपना जीवन यापन कर सके। वे एकेश्वर बाद (एक ही भगवान), जिसके अन्तर्गत भगवान का रूप अमूर्त हैं, सर्वव्याप्त हैं और निरंकारी हैं, में विश्वास रखते थे अर्थात् उन्होंने मूर्ति पूजा का पूर्ण रूप से विरोध करने का हवाला दिया था। डॉ. विश्राम घोले ने फुले के धर्मशास्त्रीय झुकाव का वर्णन करते हुये कहा कि - “फुले दंपति ने लोगों को जिस धर्म के बारे में बात की थी, उसके अन्तर्गत लोगों को क्या सही है और क्या गलत, के बारे में सिखाया तथा परम्परायें, रीति-रिवाज, मूर्ति पूजा आदि का खण्डन करके एकेश्वर बाद से परिचय कराया था।”¹³

सावित्री बाई फुले एक मानवतावादी, न्यायवादी और महिलाओं की हितेषी थी, इसीलिये उन्होंने 24 सितम्बर, 1871 को सामाजिक आध्यात्मिक आन्दोलन के रूप में सत्य शोधक समाज की स्थापना की थी।¹⁴ सत्य, न्याय, शांति पर आधारित इस संस्था का मूल उद्देश्य दलित (शूद्र, अति शूद्र), ब्राह्मण तथा समाज की सीमांत महिलाओं को शोषण व उत्पीड़न से मुक्त कराना था। उन्होंने संस्था के माध्यम से न केवल जाति व्यवस्था की समाप्ति पर बल दिया बल्कि हिन्दू धर्म के अन्तर्गत विवाह की प्रचलित पद्धतियों पर भी आघात किया था। उन्होंने दहेज जैसी प्रथा को जड़ से उखाड़ने के लिये न्यूनतम लागत विवाह की व्यवस्था की, सती प्रथा पूर्ण रूप से समाज करने का आह्वान किया तथा विधवा विवाह का समर्थन किया ताकि महिलायें पुरुषों के समान स्वतंत्रता पूर्वक जीवन यापन कर सके। हरि नारके (साहित्यकार) ने अपने निबंध में फुले दंपति का वर्णन करते हुये लिखा है कि - “सावित्री बाई एवं ज्योतिराव फुले भारत के

सामाजिक व शैक्षिक इतिहास में एक असाधारण युगल के रूप में खड़े थे, उन्होंने सामाजिक न्याय को ध्यान में रखते हुये, जो सत्य शोधक समाज की स्थापना की थी, उसके लिये वे सराहना के पात्र हैं, क्योंकि इसकी स्थापना से जो बिना दहेज के विवाह प्रथा आरंभ की, उससे समाज में लिंग भेदभाव के समापन में सुविधा प्राप्त हुयी तथा महिलाओं को लिंग के प्रति न्याय प्राप्त हुआ था।”

फुले दंपति हिन्दू धर्म के पाखंडों और आडम्बरो से इतने अधिक दुखी हो गये थे कि उन्होंने इस धर्म को त्यागने का फैसला कर लिया था। कीर (Keer) फुले दंपति के धर्म के बारे में हवाला देते हैं कि - “सावित्री बाई तथा ज्योतिराव एक निश्चित समय के बाद हिन्दू धर्म में अपना विश्वास खो दिया था और ईसाई धर्म को स्वीकार कर लिया था”¹⁵ हालांकि यह सत्य है कि उनके द्वारा स्वीकार किया गया, ईसाई धर्म का कोई भी व्यवस्थित दस्तावेज उपलब्ध नहीं है, लेकिन फिर भी यह कहा जा सकता है कि उन्होंने हिन्दू धर्म को मानवता तथा सामाजिक न्याय की दृष्टि से उचित नहीं माना था।

28 नवम्बर, 1890 में जब वे (सावित्री बाई) सत्यशोधक समाज की अध्यक्ष बनी तो उन्होंने और अधिक तेजी से समाज सुधार के कार्य को अंजाम दिया और अपनी अंतिम साँस तक कार्य करती रही थी। जब एक बार सन 1876 में बहुत बड़े पैमाने पर अकाल पड़ा तो कई लोगों ने दम तोड़ दिया था, क्योंकि अकाल के कारण खाद्यान्नों (गेहूं, ज्वार, बाजरा) की कमी उत्पन्न हो गयी थी। इन संकटकालीन परिस्थितियों में सावित्री बाई ने भूखे लोगों को भोजन वितरित किया और महाराष्ट्र में लगभग 52 मुक्त भोजन छात्रावास भी संचालित किये थे। अकाल के दौरान राहत कार्यों को बढ़ावा देने के लिये उन्होंने सन 1897 में ब्रिटिश सरकार के समक्ष प्रस्ताव प्रस्तुत किया और ब्रिटिश सरकार ने उनके प्रस्ताव को स्वीकार करते हुये राहत कार्यों में मदद प्रदान करना शुरू कर दी थी।

सावित्री बाई ने सन 1863 में शिशु हत्या को रोकने के लिये समाज की गर्भवती तथा शोषित महिलाओं की स्वास्थ्य संबंधी सुरक्षा हेतु अपने घर में ही बच्चों को

जन्म देने की प्रथा प्रारंभ की थी और अनावश्यक रूप से शिशुओं की होने वाली मौत को रोकने में कामयाब रही थी। उन्होंने बाल-विवाह पर रोक तथा विधवा विवाह का समर्थन करने के साथ-साथ जाति-प्रथा को जड़ से समाप्त करने के लिये एक सच्ची मानवता एवं ममतामयी छवि पेश की थी, क्योंकि उन्होंने एक ब्राह्मण विधवा के बच्चे को गोद लिया था ताकि अर्धर जातीय या निम्न व उच्च जातियों के बीच संबंधों में मधुरता कायम हो सके और जाति प्रथा (अस्पृश्यता) जैसी सामाजिक बुराईयों को समाप्त किया जा सके।

सन 1897 में सम्पूर्ण विश्व में फ्लेग की बीमारी उत्पन्न हुयी तो इसने महाराष्ट्र के आस-पास के क्षेत्रों को भी अपनी चपेट में ले लिया था। तब उनके दत्तक पुत्र (यशवंत राय) तथा सावित्री बाई, दोनों ने निःस्वार्थ भाव से रोगियों की सेवा की, जिसके कारण वह संक्रमित हो गयी और लम्बे समय तक बीमारी से ग्रसित होने की वजह से 10 मार्च, 1897 में उन्होंने दम तोड़ दिया था।

सावित्री बाई ने प्राचीन भारतीय समाज की महिलाओं को उनके अधिकार हेतु जो कार्य किये थे, वे सराहना के पात्र हैं, क्योंकि उस समय महिलाओं की स्थिति दीन-हीन और शोषण व उत्पीड़ित थी, ऐसी स्थिति में जब सम्पूर्ण समाज महिलाओं को एक वासना या पुरुषों के पैर की जूती समझता था, शिक्षा व समाज सुधार का कार्य करना काबिले तारीफ है। इसके लिये उन्हें हमेशा याद किया जायेगा।

सावित्री बाई: एक कवियत्री

सावित्री बाई फुले एक शिक्षक व समाज सुधारक होने के साथ-साथ वे एक कवियत्री भी थी, उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से महिलाओं को शिक्षित करने से लेकर उनका सामाजिक-आर्थिक, आध्यात्मिक, धार्मिक और सांस्कृतिक अधिकारी को प्राप्त करने के लिये संदेश प्रदान किये थे। उनका लेखन (कवियत्री) एक स्वतंत्र अभिव्यक्ति है। जिसमें मानवता, समानता, स्वतंत्रता, तर्क संगतता, विश्व बंधुत्व इत्यादि के अंश मौजूद हैं।

सावित्री बाई की कविताओं में महिलाओं को साक्षर करने के प्रति एक उत्साह व साहित्यिक योग्यता के

रूप दिखायी देते हैं। उन्होंने अपनी कविताओं में भक्तिभाव, लोकगीत तथा शायरी के माध्यम से प्राचीन भारतीय समाज की बुराईयों को बहुत ही उत्साह के द्वारा प्रस्तुत किया है।

सावित्री बाई की कविताओं का पहला संग्रह काव्या फुले, जो कि 1854 में प्रकाशित हुआ था, के अन्तर्गत महिलाओं की शिक्षा, जाति प्रथा, लिंग भेदभाव व समाज सुधार से संबंधित अनेक मुद्दों के भावों को प्रस्तुत करती हैं तथा मानवता के लिये शिक्षा कितनी महत्वपूर्ण हैं, के अंगों को प्रस्तुत करती हैं, चूंकि सावित्री बाई ने सर्वप्रथम महिलाओं के उत्थान के लिये शिक्षा पर जोर दिया था, इसीलिये उन्होंने कविताओं के माध्यम से शिक्षा के महत्व को स्पष्ट करते हुये उन्होंने कहा कि –

“जाओ शिक्षा प्राप्त करो, आत्म निर्भर बनो, मेहनती बनो, ज्ञान और धन एकत्रित करो। सभी ज्ञान के बिना नष्ट हो जाते हैं, हम ज्ञान के बिना एक पशु के समान हैं, बैठो नहीं, जाओ शिक्षा प्राप्त करो। उत्पीड़न तथा गुलामी की जंजीरो को तोड़ दो, आपको शिक्षा प्राप्त करने का सुनहरा मौका मिला है, जाति की जंजीरो को तोड़ दो और ब्राह्मणों के धर्मग्रन्थों को उखाड़ फेंको”⁶

सावित्री बाई का मानना था कि शिक्षा वह हथियार है, जिसके माध्यम से महिलाएं एकत्रित होकर समाज की बुराईयों को समाप्त करने में सक्षम होगी और अपने अधिकारों तथा स्वतंत्रता पूर्वक अपने विचारों को लोगों के सामने प्रस्तुत करने में सक्षम होगी एवं महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में एक अग्रणी भूमिका प्रस्तुत करेंगी। इसी प्रकार की उनकी दूसरी कविता ज्ञान और अज्ञान के बीच अन्तर को स्पष्ट किया तथा कहा कि शिक्षा मानव में बुरी आत्मा को मिटाने तथा मानवतावादी दृष्टिकोण रखने के लिये एक महत्वपूर्ण साधन हो सकती है। सावित्री बाई की कविता “अज्ञान” को इस प्रकार प्रस्तुत किया है –

एक ही शत्रु हमारा, उसे भगाये सब मिलकर,
उसके सिवा नहीं हैं दूजा, खोजो मन में सोचो,

सुनो गौर से उसका नाम अज्ञान हैं।

सावित्री बाई ने अपनी कविता में ज्ञान को सर्वोपरी माना और ज्ञान की तुलना ईश्वर के समान की थी अर्थात् उन्होंने ज्ञान को ईश्वर की संज्ञा दी और स्पष्ट किया कि ज्ञान ही वह तत्व है, जिसके माध्यम से महिलाएँ अच्छे तथा बुरे के बीच विभेद करने में सहायक सिद्ध हो सकती हैं। ललिता धारा ने उनकी कविता के भावों को स्पष्ट करते हुये कहा कि - “सावित्री बाई ज्ञान को एक भगवान के समान मानती थी और कहती थी कि वे अपने जीवन में सफलता हासिल करने के लिये अपने दृढ़ संकल्प के साथ ज्ञान का पीछा करें, यह सभी (महिलाओं) के लिये सबसे बड़ा उपहार हो सकता है, यह एक खजाना है, जिसे ज्ञानवान तथा बुद्धिमान लोग ही प्राप्त कर सकते हैं।”¹⁶

आत्म निर्भरता प्राप्त करने के लिये हमें प्रतिज्ञा करें, और ज्ञान का खजाना जमा करें, बिना सीखे, जीवन एक पशु अस्तित्व है, बर्बाद मत करो,

आराम से मत बैठो, एक शिक्षा प्राप्त करो, जल्दी करो, उसने सवाल उठाया, क्या उन्हें पशु कहा जाना चाहिये,

कोई ज्ञान नहीं, कोई सीख नहीं, दोनों के लिये कोई आत्मीयता नहीं है कि झूठ बोलना चाहिये, क्या उन्हें इंसान कहा जाना चाहिये?¹⁷

सावित्री बाई की यह कविता महिलाओं के संदर्भ में ज्ञान तथा समृद्धि के लिये शिक्षा एवं शारीरिक कार्यों को महत्व देती है और संकेत देती है कि यदि महिलाएँ आत्म-निर्भर बनना चाहती हैं तो वे अपनी कड़ी मेहनत व उच्च विचारों के माध्यम से बन सकती हैं, क्योंकि महिलाएँ पुरुषों से किसी भी काम में कम नहीं हैं अर्थात् वह भी पुरुषों के समान बड़े से बड़ा कार्य आसानी से कर सकती हैं। उनका यह संदेश महिलाओं को पुरुषों की गुलामी से छुटकारा पाने के संदर्भ में था।

सावित्री बाई की एक और कविता, जो कि अंग्रेजी भाषा में है, महिलाओं तथा समाज के लिये शिक्षा कितनी आवश्यक है। उनके जीवन में इसका क्या उपयोग ? तथा

इसे प्राप्त करके वे महिला सशक्तिकरण की अवधारणा को कैसे हासिल कर सकती हैं, इत्यादि पर आधारित हैं।

Go Get Education

Be Self-reliant, be industrious work, gather wisdom and riches, All gets lost without knowledge we become animal without wisdom, sit idle no more, go, get education, End misery of the oppressed and forsaken, you've got a golden chance to learn so learn and break the chains of caste. Throw away the Brahman's scriptures fast¹⁸

जैसा कि हम पूर्व में वर्णन कर चुके हैं कि सावित्री बाई की शिक्षक गुरु उनके स्वयं पति (ज्योतिराव राव फुले) थे और उनके सहयोग तथा परामर्श से ही वे (सावित्री बाई) एक उच्च कोटी की अध्यापक व समाज सुधारक बनी थी, इसीलिये उन्होंने अपनी अगली कविता ज्योतिराव फुले की स्मृति या शैक्षिक गुरु के रूप में प्रस्तुत की थी। ज्योतिराव फुले के गुणों को ध्यान में रखते हुये उन्होंने लिखा है कि -

वे हैं अज्ञानी जनों के कर्णधार देते हैं, उन्हें नित सदविचार, वे हैं कृतिवीर तथा ज्ञान योगी, जिनके कारण मैं करती हूँ कविता, जिनकी कृपा से चित्त को मिलता है आनंद, जिनसे मिली है बुद्धि, ऐसे महापुरुष को मैं करती हूँ, लाख-लाख प्रणाम।

इस कविता के भावार्थ के रूप में उन्होंने कहा कि सतत मेहनत और परिश्रम से कुछ भी हासिल किया जा सकता है, जैसा कि स्वयं मेरे पति ने मुझे अध्ययन-अध्यापन व समाज सुधारक के लिये प्रोत्साहित किया था। वे आगे लिखती हैं कि - “कड़ी मेहनत करो, अच्छी तरह से अध्ययन करो और अच्छा करो” उनके कहने का मतलब था कि अगर महिलायें किसी भी कार्य को करने के लिये दृढ़ निश्चय करले तो वह पुरुष की तुलना में वही कार्य काफी अच्छी तरह से कर सकती हैं। उन्होंने महिला व पुरुष को कभी भी सोच, शारीरिक व मानसिक दृष्टि से

भिन्न-भिन्न नहीं माना था, वे दोनों को एक समान मानती थी।

सन 1892 में सावित्री बाई की अगली कविताओं के संग्रह के रूप में जो पुस्तक प्रकाशित हुयी थी, वह बावन काशी सुबोध रत्नाकर थी, जिसमें ज्योतिबा राव फुले की जीवनी, उनकी कविता और प्राचीन व मध्य युगीन काल में ज्योतिबा राव ने मराठा इतिहास में प्रचलित ब्राह्मण व्यवस्था की आलोचना, आदि का वर्णन शामिल हैं।

सावित्री बाई की इन दो पुस्तकों के अलावा अपने पति ज्योतिबा राव के 4 भाषणों का संकलन करके प्रकाशन किया गया है - “सावित्री बाई ने अपने जीवन में लेखन के रूप में जो कार्य किया वह अनूठा तथा अन्तर्दृष्टि का पर्याय हैं, जो सामाजिक आन्दोलन के माध्यम से महिलाओं को अपना जीवन-यापन करने की स्वतंत्रता प्रदान करता है।”¹⁹

सावित्री बाई ने अपने लेखन कार्य के अन्तर्गत जिन कविताओं की रचना की हैं, उसमें विशेष रूप से महिलाओं के उत्थान हेतु शिक्षा और समाज सुधारक के संबंध में दिये गये संदेशों का विवरण मिलता है। वह विशेष रूप से ममतामयी, मानवतावादी, स्वतंत्रता व आत्म-निर्भर की धारणा को स्वीकार करने वाली महिला थी, उन्होंने अपनी कविताओं में न केवल शिक्षा की प्राप्ति हेतु संदेश दिये हैं बल्कि नैतिक शिक्षा पर भी उन्होंने पर्याप्त रूप से ध्यान आकर्षित किया है। इस दृष्टि से वे मूलरूप से एक ऐसी शिक्षा की बात करती हैं, जिसके द्वारा महिलाएं यह समझ सके कि क्या अच्छा है और क्या बुरा, वे तर्क के आधार पर शिक्षा की कसौटी को मापना चाहती थी, ताकि महिलाएं यह जान सके, समझ सके कि समाज में कौन सी चीज या वस्तु अच्छी हैं या बुरी, किसी भी वस्तु का आलोचनात्मक रूप से वर्णन करना, उनकी मुख्य पहचान थी। वह चाहती थी कि महिला प्रत्येक तथ्यों को दोनों पक्षों (सकारात्मक, नकारात्मक) से देखें और उसे समझे ताकि वे भविष्य में एक ऐसे समाज की कल्पना का

निर्माण कर सके, जिसमें बुराईयां कम, अच्छाईयां ज्यादा हो, एक आदर्श समाज का निर्माण कर सके, तभी भारत जैसे देश में, जहां अनेकों परम्पराओं, प्रथाओं व रीति रिवाज प्रचलित हैं, महिलाओं का उद्धार होना संभव है। महिलाओं के उत्थान के लिये उन्होंने जो कार्य किये, उसके लिये वह प्रशंसा के पात्र हैं ऐसी महिला को हम प्रणाम करते हैं।

निष्कर्ष

प्राचीन भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति दयनीय, उत्पीड़ित व शोषण युक्त थी। कई प्रकार की परम्पराये, प्रथाएं, रीति-रिवाज आदि प्रचलित थे, जिसके कारण महिलायें, विशेष रूप से शुद्र व अति-शूद्र वर्ग की महिलायें पिछड़ी हुयी थी, जिनका उत्थान करने व पुरुषों के समकक्ष लाने हेतु सावित्री बाई ने अपनी मुख्य भूमिका निभाई थी, हालांकि उनसे पूर्व भी कई समाज सुधारक जैसे- ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, राजाराम मोहन राय इत्यादि हुये थे, जिन्होंने अपनी-अपनी क्षमता व योग्यता के आधार पर समाज सुधार संबंधी कार्य किये थे, लेकिन फिर भी भारतीय शिक्षा एवं समाज सुधार के इतिहास में जिस महाराष्ट्रीयन महिला का नाम लिया जाता है, वह सावित्री बाई फुले ही हैं, जिन्होंने ब्रिटिश भारत की दीन-हीन, दबी-कुचली महिलाओं की स्थिति को बेहतर किया और उन्हें शिक्षित करके उनके अधिकारों के बारे में जागरूक किया था, वह न केवल शिक्षिक थी, बल्कि एक समाज सुधारक, कवियत्री भी थी, उनकी कविताओं में भी महिला उत्थान से संबंधित तथ्यों की झलक मिलती है। उनके द्वारा कविताओं के माध्यम से महिलाओं के लिये दिये गये संदेश आज भी प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। यदि वह नहीं होती तो शायद ही महिलाओं की स्थिति में सुधार हो पाता, उन्होंने जिस लगन, क्षमता व उत्साह से समाज-सुधार तथा शिक्षा संबंधी कार्य किया, वह उसके लिये सराहना के पात्र हैं, ऐसी महिला को हम तहे दिल से प्रणाम करते हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. Braj Rajan mani and Pamela Sardar, "The forgotten liberator, the life and struggle of savitri bai phule" mountain peak, New Delhi, 1988, p29, Gail Omvedt.
2. Savitri bai phule - The Pioneer of women's education in India. (www.theweek.in) 3 January 2020.
3. Nupur preeti alok (5 September 2016) – "Savitri bai phule – A pioneer in women's education in India. (www.feminismindia.com), 5 September 2016.
4. Cynthia Stephen (8 August 2017), Heroes and Sheroes of Plural India – Savitri bai phule. (www.countercurrents.org), 8 August 2017
5. From <http://en.wikipedia.org/wiki/savitribaiaphule>.
6. Explained – Savitri bai phule's impact on women's education in India – "Indian Express" (News Paper), 3 January 2020.
7. Kandukuri, Divya (11 January 2019) "The life and times of Savitribai phule" Mink, Retrieved 19 April 2019.
8. Dr. Renu Pandey (March 2015) – Crusaders of Female Education in colonial India. A case study of Savitri bai phule. "International Journal of Innovative Social Science and Humanities Research, Vol. 2, Issue 1, March 2015.
9. Thom Wolf and Susan Andrade (2008) Savitri bai and India's coversion on Education Vo. 8, oikos world views journal.
10. This in Phule's main point in hisfirst Rosalin O'Hanlon, cast, conflict and Ideology:- Mahatma Jotirao Phule and Low caste protest in 19 century western india cambridge:- Cambridge University Press 1985, 125-128. Quotation italics are added.
11. Lalitha Dhara (Ed.), Kavyaphule, p – 67.
12. Sati is an old, largely defunct custom, among some communities. The ritual of dying at the funeral pyre of the husband in known as "Sati". According to some of the Hindu scriptures women dying at the funeral pyre of her husband go straight to heaven so it's good to practice this ritual. Initially it was not obligatory for the women but if she practiced such a custom she was highly respected by the Society. Sati was considered to be the better option than living as a widow as the plight of widows in Hindu Society was even worse. (Archana Malik – Goure, Jyotiba Phule:- A Modern Indian Philosopher, p 36
13. G.P. Deshpande, "Selected work's of Jotirao Phule", P 225.
14. Dr. Archana Malik Goure (2016) – "Feminist Philosophical Thought in Colonial India." International Journal of Management and Social Science (ISSN 2455:2267) vol. 04, Issue 03, 2016, pp. 11
15. Keer, op. cit, p6, quoting a biography by walvek or phule's friend and contemporary.
16. Lalitha Dhara (Ed.) Kavya phule, p 67.
17. "Kavya Phule" ed. By, Lalitha Dhara, Mumbai, 2012, p77
18. Braj Rajan Mani and Pamela Sardar, "the forgotten liberator :- the life and struggle of Savitri bai phule mountain peak, New Delhi, 1988 p.66
19. Tharu and B. Lalitha (1993) Women writing in India, vol, oup, Delhi, p 212.